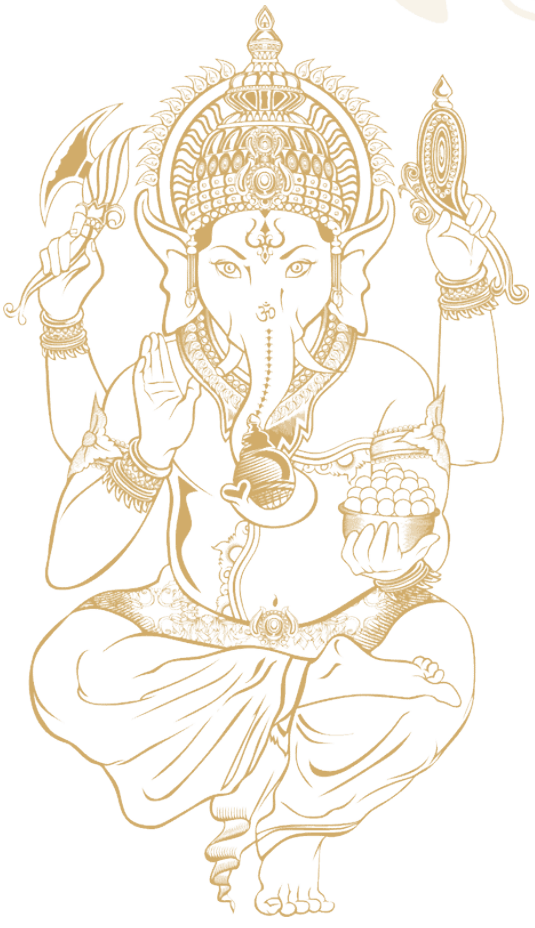

Nibriti

25 Aug 2023

05:33 PM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121742501**

तिथि 25/08/2023 **समय** 17:33:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:11:07
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	15:58:32 घं
वेलान्तर	00:02:14 घं
सूर्योदय	05:25:18 घं
सूर्यास्त	18:15:30 घं
चैत्रादि संवत	2080
शक संवत	1945
मास	श्रावण
पक्ष	शुक्ल
तिथि	9
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	वैधृति
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	या-यामिनी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

बुध 11वर्ष 0मा 7दि

बुध

25/08/2023
01/09/2034

	00/00/0000
	25/08/2023
शुक्र	26/11/2023
सूर्य	01/10/2024
चन्द्र	03/03/2026
मंगल	28/02/2027
राहु	16/09/2029
गुरु	23/12/2031
शनि	01/09/2034

योगिनी

भद्रिका 3वर्ष 2मा 27दि

भद्रिका

25/08/2023
21/11/2026

	00/00/0000
	25/08/2023
सिद्धा	22/05/2024
संकटा	02/07/2025
मंगला	22/08/2025
पिंगला	01/12/2025
धान्या	02/05/2026
भ्रामरी	21/11/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			25:32:06	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	राहु	---	0:00			
सूर्य			07:51:51	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	मूलत्रिकोण	1.56	ज्ञाति	पितृ	सम्पत
चंद्र			21:21:24	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	शुक्र	नीच राशि	1.17	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			04:30:02	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	शनि	शत्रु राशि	1.35	कलत्र	भ्रातृ	क्षेम
बुध	व	अ	27:32:01	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि	0.95	आत्मा	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			21:13:42	मेष	भरणी	3	शुक्र	गुरु	मित्र राशि	1.17	भ्रातृ	धन	विपत
शुक्र	व		19:50:16	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	शुक्र	शत्रु राशि	1.55	मातृ	कलत्र	जन्म
शनि	व		09:47:22	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	गुरु	मूलत्रिकोण	1.48	पुत्र	आयु	वध
राहु	व		02:14:46	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	शत्रु राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		02:14:46	तुला	चित्रा	3	मंगल	केतु	सम राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

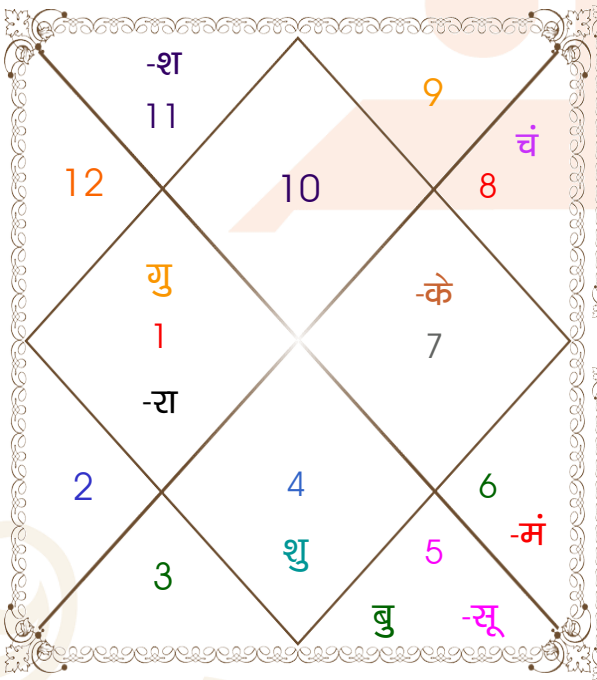

चन्द्र कुंडली

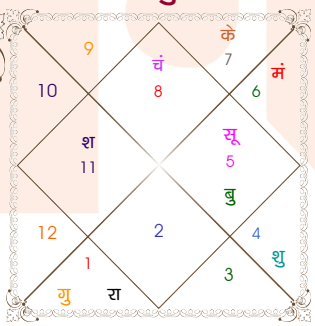

नवमांश कुंडली

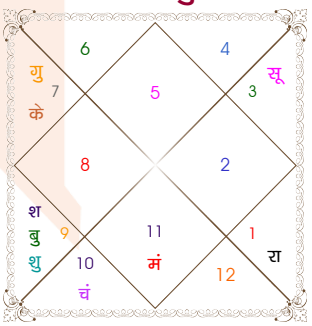

सर्वाष्टकवर्ग

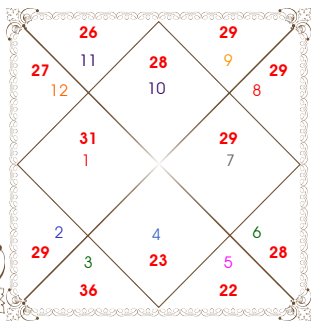

दशमांश कुंडली

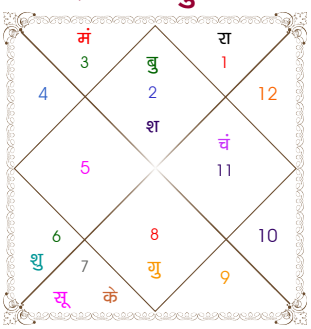

AstroBaba
Lakshmi colony Road no. 2 Kanhauli
Muzaffarpur
9115551572
Astrobaba12951@gmail.com

नक्षत्रफल

आप ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशिस्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग मृग, योनि मृग, गण राक्षस तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "य" या "या" से प्रारम्भ होगा यथा- यामिनी आदि।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ है इसके द्वितीय चरण में उत्पन्न होने से जातक के छोटे भाई को अरिष्ट होता है। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि से शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 28000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न कराने चाहिए। 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन कराना चाहिए। इस प्रकार शास्त्रीय विधि से जप हवनादि करने से नक्षत्र की शान्ति हो जाती है।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप अपने समाज में एक ख्याति प्राप्त महिला होंगी तथा दूर दूर तक प्रसिद्ध रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा कान्ति एवं लावण्यता की उसमे बहुलता दर्शनीय रहेगी। आप नाना प्रकार के धन वैभव से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक जीवन में उसका उपभोग करेंगी। अपने समस्त कार्यों को सिद्ध करने में आप स्वयं सक्षम रहेंगी। आपका पराक्रम भी समाज में व्याप्त रहेगा तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को हृदय से स्वीकार करेंगे। आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपको श्रेष्ठ एवं पूजनीय समझेंगे। आप भाषण देने की कला में अत्यन्त ही निपुण होंगी तथा अपने भाषणों से अन्य जनों को खूब प्रभावित करेंगी।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

आपका स्वभाव अत्यन्त ही क्रोधी होगा तथा कभी कभी इसकी प्रवलता के कारण आपको कई प्रकार की हानि भी उठानी पड़ेगी। समाज में अन्य जनों से भी आपके मधुर संबंध

रहेंगे। आप एक आस्तिक महिला होंगी तथा अपने जीवन में धर्मानुपालन करने में सर्वथा तत्पर रहेंगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक क्रोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपके मित्रों की संख्या अधिक मात्रा में रहेगी तथा मित्र मण्डली में आप प्रमुख तथा लोकप्रिय रहेंगी। आपका स्वभाव सन्तोष से युक्त रहेगा एवं धन की यथाशक्ति उपलब्धि पर ही सन्तुष्ट रहेंगी तथा अनाश्यक इच्छाएं नहीं रखेंगी परन्तु धर्माचरण में रत रहते हुए भी आप का अपने क्रोधी स्वभाव पर कोई नियंत्रण नहीं रहेगा।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरक्रोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

आप लेखन कार्य में भी पूर्ण रूप से रूचिशील तथा तत्पर रहेंगी फलतः काव्य लेखन में आप सफलता प्राप्त कर सकेगी। आप एक सहनशील महिला होंगी तथा सुख दुख की समान अनुभूति करेंगी। आप चतुराई के गुण से भी सुशोभित रहेंगी। इसके अतिरिक्त निम्न श्रेणी के लोगों में आपका विशेष प्रभाव रहेगा तथा ये लोग आपको अत्यन्त ही पूजनीय समझेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आप स्वर्ण पाद में पैदा हुई हैं। स्वर्ण पाद में पैदा होने के कारण जातक कई प्रकार से जीवन में दुःख एवं कष्ट प्राप्त करता है तथा इसमें उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता एवं धनाभाव से भी नित्य दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में उसे सुखसंसाधनों की भी अल्पता रहती है। जिससे उसके मन में नित्य तनाव व्याप्त रहता है। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्याधिक परिश्रम के द्वारा ही सफलता अर्जित हो सकती है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ वर्ग में स्थित है। अतः इससे आपको अशुभ फल अल्प तथा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

अतः आप जीवन में सम्पूर्ण सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य एवं नौकर चाकरों से भी आप सम्पन्न रहेंगी। आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा एक धनवान महिला के रूप में समाज में ख्याति अर्जित करेंगी। सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के वाहनादि से भी सुशोभित रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आपके पति तथा पुत्र भी सुन्दर गुणवान एवं सम्मानित रहोंगे। साथ ही सेवक गण भी गुणसम्पन्न होंगे। आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आपके लिए लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि सुख को आप प्राप्त करने में भी सौभाग्यशाली रहेंगी।

वृश्चिक राशि में जन्म होने के कारण आपका वक्षस्थल विस्तृत रहेगा तथा आखें भी सुन्दर एवं बड़ी बड़ी होंगी। साथ ही शरीर के वर्ण में अल्प श्यामलता का समिश्रण रहेगा। आपके हाथ या पैर में कहीं पर मछली का निशान भी हो सकता है। साथ ही आपकी अधिकांश हस्त रेखाएं पक्षी एवं वज्र के आकार की रहेगी। गुरूजनों तथा माता पिता से आपके अच्छे संबंध रहेंगे। अतः आप इनसे सहयोग भी प्राप्त करेंगी। बाल्यावस्था में आप काफी बीमार भी रहेंगी। आप एक तीव्र बुद्धि एवं परिश्रमी महिला होगी। अतः सरकारी क्षेत्र में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित कर सकेंगी। आपकी क्रूर तथा कठोर कार्य करने में अधिक इच्छा रहेगी। अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों को अपना कार्य क्षेत्र बना सकती हैं।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपके पेट एवं मस्तक की आकृति भी दीर्घ होगी तथा मन में लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा। अन्य जनों की वस्तुओं को देखकर आप में इस भाव की अधिक ही प्रबलता होगी। आपके शरीर में कान्ति तथा कोमलता का भाव परिलक्षित होगा। स्वभाव से ही धर्म एवं ईश्वर के प्रति आप आस्था प्रकट करेंगी। आपके ठोड़ी तथा नाखूनों में भी चोटादि का निशान होगा। आप हमेशा किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगी तथा कार्य को सम्पन्न करने में अत्यन्त ही प्रवीण होंगी। आप बन्धु वर्ग से भी सहयोग प्राप्त कर सकेंगी। आपका समाज में पूर्ण प्रभाव रहेगा तथा आपके प्रताप को सभी जन स्वीकार करेंगे। आप में स्वाभाविक उग्रता भी विद्यमान रहेगी एवं सरकार द्वारा आप धनहानि भी प्राप्त करेंगी।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप विपुल धन की स्वामिनी होंगी तथा अपने विस्तृत परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों को भी सुख प्रदान करने वाली होंगी। पुरूषों के विषय में आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान तथा लाभ प्राप्त होता रहेगा। राजकीय सेवा में भी आपकी नियुक्ति हो सकेगी। आपके मन में अन्य के धन को प्राप्त करने की इच्छा अत्यन्त ही बलवती रहेगी तथा समय समय पर आप इसके लिए यत्नशील भी रहेंगी। आपकी बुद्धि दृढ़ होगी तथा अपने जीवन के कार्यकलापों को दृढता से ही सम्पन्न करेंगी। किसी न किसी कार्य को करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी तथा अपने साहस से अधिकांश कार्यों को सफलता से अर्जित करेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप जुआ आदि खेलने में उत्सुकता प्रकट करेंगी परन्तु इसमें आपको आर्थिक हानि ही अधिक होगी। अत्याधिक क्रोधी स्वभाव होने के कारण आपका अन्य लोगों से विवाद आदि चलता रहेगा। आप हृदय से निर्बलता का अहसास करेंगी तथा अधिकांशतः अशान्ति की ही अनुभूति आपको रहेगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बाल्यकाल से ही अपने घर से अन्य स्थान में निवास करेंगी तथा आपका स्वभाव भ्रमण प्रिय भी रहेगा। आप एक अभिमानी महिला होंगी तथा समय समय पर अन्य जनों के समक्ष अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करती रहेंगी। अपने बन्धु तथा संबंधियों से आपका लगाव रहेगा तथा अपनी साहसी प्रवृति से धनार्जन करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। आप चतुराई का भी भी प्रदर्शन करेंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलने वाली होंगी। आपके मन में कठोरता की प्रबलता रहेगी तथा कोमल भावनाओं की अल्पता रहेगी। आप स्वभाव से उग्र रहेंगी तथा छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित हो जाया करेंगी। आपका स्वभाव अन्य लोगों से विवाद करने वाला भी होगा एवं प्रायः ये विवाद आपके होते ही रहेंगे। आप में

शारीरिक बल का अभाव नहीं रहेगा तथा स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा परन्तु समाज के अन्य लोगों का आपके प्रति विरोध भाव रहेगा। आप स्वभाव से साहसी भी होंगी। तथा साहस पूर्वक अपने अधिकांश कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल हो सकती है। आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर होगा तथा आप यदा कदा कठोर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगी जिससे अन्य जन आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यन्पूर्वक अपने वार्तालाप मधुर शब्दों का ही उपयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रिय रहेंगी एवं अपने समस्त कार्य कलापों को बिना किसी हस्तक्षेप के ही सम्पन्न करना चाहेंगी। आप शान्त प्रवृति की महिला होगी तथा हिंसा आदि के भाव का आप में अभाव रहेगा। आपकी आजीविका अर्जन के साधन भी उत्तम रहेंगे। सत्य का अनुपालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेगी तथा अपने बन्धुवर्ग एवं सम्बन्धियों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी। सभी लोग आपको स्नेह प्रदान करेंगे। धर्म तथा ईश्वर के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं धर्माचरण में सर्वथा तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप निर्भीक एवं साहसी महिला होंगी तथा विवादादि क्षेत्र में प्रायः सफलता ही प्राप्त करेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी

सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सर्वदा अनिष्ट फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति विशेष सतर्क रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं या अन्य शुभ कार्य सफल नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए एवं नित्य

शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोम तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, मूंगा, तांबा, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी योग्य पात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा समस्त अशुभ प्रभाव नष्ट होकर शुभ प्रभाव बढेंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।